ASIAN JOURNAL OF EDUCATIONAL RESEARCH & TECHNOLOGY Vol. 7 (2), Apr. 2017: 4-6
ISSN (Print) : 2249-7374
Website: http://www.tspmt.com ISSN (Online): 2347-4947
RESEARCH ARTICLE

शिक्षक शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के प्रमुख स्वकौशल क्षमताओं का ज्ञान एंव उसके संवर्द्धन का अध्ययन

विनोद कुमार जैन एवं भावग्राही प्रधान
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाड़नूँ (राजस्थान)
Email: jain.vinod397@gmail.com

Received: 30th Nov. 2016, Revised: 18th jan. 2017, Accepted: 21st Jan. 2017

सारांश

शिक्षा मानव की मूलभूत आवश्यकता है। व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास शिक्षा पर निर्भर करता है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि होती है तथा व्यवहार में परिवर्तन होता है और वह सभ्य एवं सुसंस्कृत सामाजिक प्राणी बनता है। प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा ही शिक्षा की नींव है। जिस पर शिक्षा का भव्य महल निर्मित होता है। अतः अध्यापक को इस स्तर पर कौशल युक्त करना ही महत्वपूर्ण है। अतः शोधार्थी ने शिक्षक शिक्षा में में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर स्वकौशल क्षमताओं का ज्ञान एवं संवर्द्धन का अध्ययन किया गया।

मुख्य शब्दः *कौशल, स्वकौशल क्षमताओं, संवर्द्धन, व्यवहार, शिक्षक–शिक्षा, शैक्षिक नवाचार, कौशल विकास कार्यक्रम*

प्रस्तावना

नूतन सहस्त्राब्दी के आधुनिक भूमंडलीय युग में किसी भी राष्ट्र के लिए उसके भौतिक एवं मानव संसाधनों का अत्यन्त महत्व हैं। वस्तुतः भौतिक एवं मानव संसाधन ही किसी राष्ट्र को अग्रणी राष्ट्रों की कतार में खड़ा करने के लिए सक्षम बनाते है। भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सीमित एवं प्रकृतिजन्य होने के कारण आज के युग में मानव संसाधनों के विकास पर अधिक जोर दिया जाने लगा है। निःसन्देह किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तब उन्नति कर सकता है जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उनका लाभ उठाने के लिए समर्थ हो। वस्तुतः मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा–प्रणाली ही है। प्रत्येक मनुष्य के अन्दर कुछ जन्मजात शक्तियाँ निहित होती है तथा इन शक्तियाँ के प्रस्फुटन से ही व्यक्ति का विकास होता है। यदि इन शक्तियों को प्रस्फुटित होने के पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं होते है तो मानव विकास अधूरा रह जाता है तथा वह अपनी अन्तर्निहित परन्तु अप्रस्फुटित योग्यताओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाता है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज अपने नागरिकों की जन्मजात तथा अन्तर्निहित योग्यताओं के अधिकतम विकास के प्रति सचेष्ट रहता है। वस्तुतः आज के विकासशील युग में प्रत्येक राष्ट्र अपने मानव संसाधनों के संरक्षण एवं विकास पर प्रमुख जोर देता है। निःसन्देह शिक्षा प्रणाली मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास की सर्वाधिक सरल, व्यवस्थित एवं प्रभावी विधा है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का अधिकतम विकास करके उसके ज्ञान, बोध व कौशल में वृद्धि की जाती है। शिक्षा ही व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति को सभ्य व सुसंस्कृत बनाकर उसे समाज व राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा की यह प्रक्रिया जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्युपर्यन्त लगातार किसी ना किसी रूप में एक सतत प्रक्रिया के रूप में सदैव चलती रहती है। प्रारम्भ में बालक अपने माता–पिता परिवार के अन्य सदस्यों तथा पड़ोसियों आदि से अनौपचारिक ढंग से शिक्षा प्राप्त करता है। सूचना प्रौद्योगिकी के आधुनिक युग में जनसंचार माध्यमों एवं तकनीकों ने ज्ञान प्राप्ति तथा कौशल विकास का एक नया द्वार खोल दिया है।

शिक्षा एवं समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है। समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, अपेक्षाओं और परिस्थितियों में अनवरत परिवर्तन होता रहता है जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में शिक्षा पर पड़ता है। फलतः शिक्षा में उत्कृष्ठ शैक्षिक नवाचारों कों समाहित करना अपेक्षित है। शैक्षिक नवाचारों का अभिज्ञान करके शिक्षक अपनें शिक्षण को प्रभावशाली बना सकता है। एक प्रभावशाली शिक्षण में शिक्षण–कौशलों का समन्वित समावेश होता है।

शिक्षा सबके के लिए, यह एक मीठा लगने वाला आर्दश वाक्य है। लेकिन वर्तमान में यह कटु सत्य है जिस देश ने पहले अपने देश के लोगों को शिक्षित व कौशल क्षमताओं का विकास कर लिया वही देश हर स्तर पर विकसित हो गया इसका अभिप्राय यह हुआ कि शिक्षा का प्रसार राष्ट्रीय विकास की अनिवार्य शर्त है। वास्तविकता यह है कि शिक्षा के प्रसार से तीव्र विकास अवश्यसम्भावी है। यूरोप, जापान, आस्ट्रेलिया, अमेरिका आदि वे देश है जो 19 वी शताब्दी में अपनी जनता को शिक्षित करने के अभियान में यही देश अज्ञान से छुटकारा प्राप्त कर विकसित राष्ट्रो के रूप में उभर पाये। पाकिस्तान, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के कुछेक देश जिनमें से भारत भी एक है जो कि 21 वी शताब्दी के उषाकाल तक भी पूर्ण शिक्षित नही हो पाया। हमारे देश में जीवन स्तर व विकास के नये आयामों को राष्ट्रीय विकास की मुख्य धारा के साथ नहीं जोड़ा जा सका है अतः समय का तकाजा हैं कि शिक्षक–शिक्षा के प्रमुख कौशल के अध्ययन पर ध्यान दे।

अध्ययन का औचित्य

किसी भी देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए कौशल और ज्ञान दो प्रेरक महत्वपूर्ण है जिन देशों ने कौशल के उच्च स्तर को प्राप्त कर लिया है। वे वर्तमान में वैश्विक माहौल में उभरती अर्थव्यवस्था की मुख्य चुनौती सें निपटने में वे

देश आगे है। किसी भी देश में कौशल विकास कार्यक्रम के लिए मुख्य रूप से युवाओं पर ही जोर होता है। और इसका लाभ तभी मिलेगा जब युवा वर्ग स्वास्थ, शिक्षित और कुशल होगा।

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा के मायने तीव्रता से परिवर्तित हो रहे है। सामाजिक परिवर्तन एवं विकास के लिए कौशल को संयंत्र माना जाता है इस प्रकार शिक्षा का संबंध वर्तमान से न होकर भविष्य से होता है। इसलिए शिक्षा को इस परिपेक्ष्य में देखें कि 21 वी शताब्दी में प्रवेश करने वाली नई पीढी अपने आप को नयी शताब्दी के लिए समर्थ बना सके। आधुनिक युग में जहां एक और प्रगति पथ पर अग्रसर हुआ जा रहा है। वही पर जीवन मूल्यों, व्यक्तित्व विकाश, प्रबन्धन क्षमता, व सम्प्रेषण क्षमता का निरन्तर ह्यस होता जा रहा है। कक्षाओं में शिक्षक, शिक्षार्थी के मध्य दूरी बढती जा रही है क्योंकि विद्यार्थियों के समक्ष ज्ञान के अथाह भण्डार तकनीकी सुविधा ने उपस्थित कर दिये है। भौतिकवाद इस युग में रोजगार परक कौशलों की शिक्षा हर स्थान पर प्राप्त हो सकती है। लेकिन एक श्रेष्ठ मानव का निर्माण कैसे हो इस हेतु हमे आज के शिक्षार्थी में कुछ कौशलों का विकास यथा जीवन कौशल व सम्प्रेषण कौशल का विकास आवश्यक है। इस हेतु शोधार्थी ने शिक्षक–शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के स्वकौशल क्षमताओं का ज्ञान एंव उसके संवर्द्धन विषय का चयन किया है।

शोध के उद्देश्य

1. शिक्षक शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन कौशल एवं क्षमताओं के ज्ञान का अध्ययन करना।
2. शिक्षक शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन कौशल क्षमताओं का सवर्द्धन करना।

शोध की परिकल्पनायें

1. शिक्षक शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन कौशल क्षमताओं के विकास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. शिक्षक शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन कौशल क्षमताओं पर विविद्य संवर्धन कार्यक्रम के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध की विधि

किसी भी अध्ययन को सफलता पूर्वक प्रेषित करने के लिए यह आवश्यक है कि समस्या के अनुरूप ही विधि का चयन किया जायें। यदि विधि का चुनाव उचित नहीं किया जाता है तो शोध के परिणाम सार्थक निकले ऐसी आशा नहीं की जा सकती। शोधकर्ता अपने शोध में प्रयोगात्मक शोध विधि का प्रयोग करेगा क्योकि वह शिक्षक शिक्षा के विद्यार्थियों में पूर्व परीक्षण के माध्यम से उनकी जीवन कौशल का ज्ञान प्राप्त करेगा तथा उपचार हेतु प्रशिक्षण प्रदान करेगा ततः पश्चात पश्च परीक्षण द्वारा ये ज्ञात करेगा की विद्यार्थियो में जीवन कौशल क्षमताओं का कितना संवर्द्धन हुआ है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य की जनसंख्या के बी.टी.सी. के 30 विद्यार्थियों का चयन से किया गया। उन 30 विद्यार्थियों के प्रमुख जीवन कौशल क्षमताओं के ज्ञान का अध्ययन किया गया तथा 30 विद्यार्थियों पर संर्वद्धन हेतु गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन किया गया।

अध्ययन के चर

प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र व आश्रित चर निम्नलिखित होगे–

1. स्वतन्त्र चर – शिक्षक– शिक्षा के विद्यार्थी, विविद्य संवर्धन कार्यक्रम।
2. आश्रित चर – जीवन कौशल, सम्प्रेषण कौशल ।

शोध की परिसीमाएं

किसी भी अनुसंधान कार्य में साधनों, समय और शक्ति तीनों के सीमित होने के कारण विषय के सभी पक्षो का गहन और सर्वागीण अध्ययन करना कठिन होता है। प्रस्तुत अध्ययन भी इसका अपवाद नहीं है। अतः इस शोध कार्य में निम्नांकित सीमाऐं हैः–

1. प्रस्तुत अध्ययन शिक्षक शिक्षा में अध्ययनरत 30 विद्यार्थियों तक ही सीमित है, जबकि अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में केवल बी.टी.सी. स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
3. अध्ययन के प्रमुख स्वकौशल में जीवन कौशल तक सीमित है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त किये गए उपकरण शोधकर्ता द्वारा स्व निर्मित किये।

विश्लेशण

पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण द्वारा प्राप्त आकड़ों का विश्लेषण कर निम्न परिणाम प्राप्त हुये–

तालिका 1: 'टी' टेस्ट के लिए ऑकड़ों की व्याख्या

Test	Number	Mean	S.D.	"t" Value	Decision
Pre-Test	30	21.85	6.20	9.80	Rejected
Post-Test	30	34.77	3.54		

निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा विषय से संबंधित प्राप्त जानकारी, संग्रहित कर प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए गए:

1. अतः हम देख सकते है कि टी–मूल्य तालिका की 0.5 स्तर की परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया गया है।
2. जीवन कौशल के विभिन्न आयामों का अध्ययन करने से ज्ञात हौता है कि छात्र–छात्राओं के जीवन कौशल विभिन्न आयामों सामान्य मात्रा में प्राप्त हुए है।

सुझाव

1. प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा मूलभूत सुविधायें कम मिलती है तथा परिवारिक परिवेश का ठीक न होना व अभिभावको में जागरूकता कम है अतः शिक्षको को अभिभावको में जागरूकता उत्पन्न करनी होगी।
2. प्रशिक्षणार्थियों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का शाला प्रबंधन एवं विकास समिति केवल वर्ष के प्रारम्भ में ही सक्रियता से भाग लेती है जबकि समिति को इस कार्य हेतु वर्ष भर प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. Pramod D. and Celine P. (2011): A Study on the Level of Life Skills of Student Teachers of Kerala. Indian Journal of Life Skill Education, 2(2): 389-399.
2. Yashpal D. Netragaonkar and Somnath Kisan Khatal (2011): Life Skill Awareness Programme and its Effectiveness for B. Ed. Students, Vol I, Issue II
3. गुरूमौज (1983): अध्यापक के वांछित गुणों का धारण (छात्रों, अध्यापकों एवं प्रशिक्षकों की दृष्टि से) सम्पादित, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उ.प्र., इलाहाबाद।
4. अरोरा के. एवं चोपरा आर. (1969): ए स्टडी आफ स्टेट्स आफ टीचर्स एडुकेटर्स वर्किंग इन एलिमेंट्री टीचर्स ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली।
5. सिंह त्रिभुवन (1984): शिक्षण एवं शिक्षण कौशल, भारत–भारती प्रकाशन, जौनपुर।